चिंतनीय है हाथियों की घटती संख्या

डॉ. महेश परिमल

हमारे देश में हाथियों की संख्या बहुत तेज़ी से कम हो रही है, इस बात की चिंता शायद किसी को नहीं है। हमारे यहां हाथियों की संख्या बढ़ाने की दिशा में कोई विशेष कार्य नहीं हो रहा है, इसलिए वह दिन दूर नहीं, जब हाथी भी नामशेष रह जाएंगे।

अगर सरकारी आंकड़ों पर विश्वास करें, तो हमारे देश में हाथियों की संख्या 1977 में 25,877 थी, जो बढ़कर 2002 में 26,413 हो गई। इसके बाद भी देश के दक्षिण और पूर्वोत्तर राज्यों में हाथियों की संख्या में कमी आई है। विशेषज्ञों के अनुसार सौ साल पहले हमारे देश में एक लाख हाथी थे, परंतु हाथियों एवं मानवों के बीच संघर्ष में हाथियों की संख्या क्रमशः घटती रही है। कर्नाटक में हाथियों की संख्या 6077 से घटकर 5737, असम में 5312 से घटकर 5246 और अरुणाचल प्रदेश में 1800 से घटकर 1607 हो गई है। नागालैंड में 158 के बदले अब मात्र 145 हाथी ही रह गए हैं। मणिपुर में उनकी संख्या 30 से घटकर 12 हो गई है। त्रिपुरा में 70 से घटकर 40 हो गई है।

केरल के एलिफेंट स्टडी सेंटर के जेकब वी.चीरन के अनुसार हाथियों की संख्या में चिंताजनक रूप से कमी आ रही है। अलबत्ता, बाघों की संख्या जिस प्रकार घट रही है, उतनी खराब स्थिति तो नहीं है, पर यदि हाथियों के शिकार पर अंकुश नहीं लगाया गया, तो परिस्थितियों को विपरीत होने में समय नहीं लगेगा। हाथियों का शिकार आज दुगने स्तर पर किया जा रहा है। इसका एक कारण है जनसंख्या बढ़ने के कारण मनुष्य के रहने के लिए जंगलों की कटाई और दूसरा कारण है वन विस्तार के समीप के गांवों में हाथियों की घुसपैठ। पूर्वोत्तर राज्यों के निकटवर्ती गांवों में हाथियों के हमले के डर से उन्हें मार दिया जाता है। अकेले असम में ही पिछले पांच वर्षों में 200 हाथियों को मार डाला गया है।

कहा जाता है कि चावल से बनती शराब की गंध से

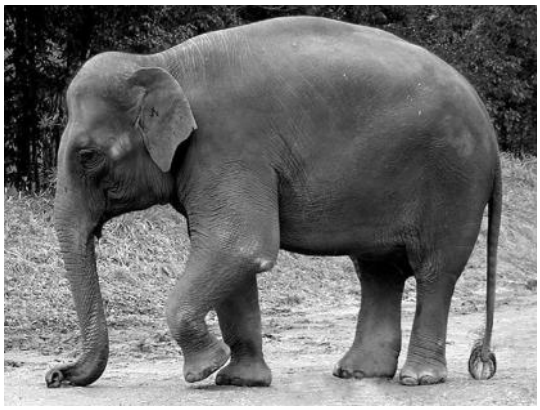

आकर्षित होकर हाथी गांव में घुस कर लोगों को अपने पैरों तले रौंद डालते हैं और आदिवासियों के घरों को भी नुकसान पहुंचाते हैं। अपनी धुन में दौड़ते ये हाथी लहलहाती फसलों को भी नुकसान पहुंचाते हैं। यही परिस्थिति छत्तीसगढ़ के पत्थल गांव के आसपास, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और झारखंड में भी है। हाथियों का हमला होते ही गांववासी ढोल बजाकर, पटाखे फोड़कर और जलती मशालें लेकर इनका पीछा करते हैं और उन्हें गांव से बाहर खदेड़ने का प्रयास करते हैं। अब उन्होंने हाथियों को ज़हर देने का रास्ता अपनाया है और इससे अब तक 122 हाथियों का खात्मा हो चुका है।

पूर्वोत्तर राज्यों में हाथियों की संख्या में कमी आने का मुख्य कारण उनके रहने के स्थानों में आई कमी, गैर-कानूनी तरीके से उनका शिकार और मनुष्य तथा हाथियों के बीच की अस्तित्व की लड़ाई है। पूर्वोत्तर राज्यों की कुछ आदिवासी जातियां कभी पारंपरिक कारणों से तो कभी अन्य कारणों से हाथियों का शिकार करती हैं। परिणामस्वरूप हाथियों की संख्या में लगातार कमी हो रही है। दक्षिणी राज्यों में और पूर्वी एशिया में हाथी को पवित्र माना जाता है और धार्मिक उत्सवों में या शाही सवारी के लिए उसका काफी महत्त्व होता है।

वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन सोसायटी ऑफ इंडिया के अनुसार इस वर्ष हाथियों के गैर-कानूनी शिकार के 15 मामले सामने आए हैं। पिछले वर्ष इस प्रकार के मामलों में 23 हाथियों के शिकार की बात सामने आई थी। पुलिस ने 169 किलोग्राम हाथीदांत और दो दंतशूल बरामद किए थे। यह संख्या ही दर्शाती है कि कितने बड़े स्तर पर हाथियों का शिकार किया जा रहा है, यह जानकारी सोसायटी के एक अधिकारी ने दी।

हाथी दांत के वैश्विक व्यापार पर प्रतिबंध के बावजूद इस व्यापार में लगातार वृद्धि हो रही है। इन कारणों से नर हाथियों का अंधाधुंध शिकार होने से नर एवं मादा हाथियों के अनुपात में भी भारी अंतर आया है। तामिलनाडु की नीलगिरी की पहाड़ियों पर यह अंतर विशेष ध्यान खींचता है, जहां 6000 से 10,000 हाथी बसते हैं।

देश में बाघों के 27 अभयारण्य होने के बावजूद बाघों की संख्या तेज़ी से घट रही है और सरिस्का में तो एक भी बाघ शेष नहीं है। ऐसा ही हाथियों के मामले में भी हो, इसके पहले ही हमें सावधान हो जाना होगा। गैर-कानूनी शिकार और हाथी दांत के अवैध व्यापार से अपनी रोटी सेंकने वाले स्वार्थी लोगों को पकड़ कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की आवश्यकता है।

यह तो सभी जानते हैं कि हाथी की याददाश्त बहुत तेज़ होती है, इसके अलावा उसमें और भी कई विशेषताएं होती हैं, जिनमें उसकी सूंघने और सुनने की शक्ति प्रमुख है। बहुत लंबे समय बाद भी वह अपने पालक को मात्र सूंघ कर और उसकी आवाज़ से पहचान जाते हैं। इसी प्रकार वह अपने शत्रु को भी पहचान लेते हैं।

किंतु हाल ही में केन्या के प्राणी संग्रहालय के संचालकों ने बताया कि हाथी अलग-अलग तरह की आवाज़ों का अंतर जानने के साथ-साथ उनकी नकल भी कर सकते हैं। जंज़ीर से बंधे होने के बाद भी वे दो मील दूर से गुज़रने वाले ट्रक की आवाज़ सुन कर उसकी हूबहू नकल कर सकते हैं। इससे यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि हाथी एक-दूसरे से अलग होकर भी परस्पर संवाद कायम रख सकते हैं। वैसे तो हाथी झुंड में ही रहना पसंद करते हैं, किंतु संदेश आदान-प्रदान की उनकी अलग ही पद्धति होती है। झुंड के हाथी एक-दूसरे की आवाज़ की नकल कर अपने संगठन के मज़बूत होने की पुष्टि करते हैं। आवाज़ का अनुकरण करने की शक्ति प्रायः पक्षियों, समुद्री स्तनधारियों, चमगादड़ों और बंदरों में तो देखने को मिलती है, पर हाथी भी ऐसा कर सकते हैं, यह नई बात है। यह सारी जानकारी हाल ही में हुए एक शोध से सामने आई है। ***(स्रोत फीचर्स)***